Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का अध्ययन

राजीव सिंह
शोधकर्त्ता, एम0ए0, एम0एड्0, नेट, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।
डॉ0 प्रेम चन्द यादव
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, बी0एड्0 विभाग, श्री गाँधी पी0जी0 कालेज, मालटारी, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number : 170-175
Publication Issue :
November-December-2020
Article History
Accepted : 10 Dec 2020
Published : 30 Dec 2020

सारांश– समस्या कथन– ''आजमगढ़ मण्डल के महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का अध्ययन'' करना है। अध्ययन के उद्देश्य में कला, विज्ञान एवं व्यवसायिक वर्ग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में आजमगढ़ मण्डल के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों से है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों (200 कला वर्ग, 200 विज्ञान वर्ग एवं 200 व्यवसायिक वर्ग) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रस्तुत प्रश्नावली का निर्माण अध्ययनकर्ता द्वारा स्वयं किया गया है। इसमें उत्तम करणीय विकल्प के साथ अन्य तीन विकल्पों (कुल चार विकल्प) के माध्यम से सामाजिक चेतना का मापन करने का प्रयास किया है। अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि–

- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों से उच्च है।
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है अर्थात् छात्रों में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं से उच्च है।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों के समान है।

मुख्य शब्द– उच्च शिक्षा, छात्र एवं छात्राएँ, सामाजिक चेतना, तुलना, टी–अनुपात।

प्रस्तावना –हमारे देश में सामाजिक सौहार्द व साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना नागरिकों में भरी हुई है। परन्तु समय–समय पर कुछ असामाजिक तत्व व कुछ राजनैतिक दल इस सौहार्द व धर्मनिरपेक्षता की भावना को अपने लाभ हेतु बिगाड़ने का प्रयास भी करते रहते हैं। साम्प्रदायिक सौहार्द से तात्पर्य 'समाज के अन्तर्गत

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आने वाले लोगों का अपने समाज के उत्थान एवं मानव कल्याण हेतु किए जाने वाले सम्मिलित प्रयास से होता है जिसमें व्यक्ति अपनी धार्मिक व जातिगत भावनाओं से ऊपर उठकर मानव उत्थान व आने वाली पीढ़ियों के उत्थान के लिए समाज उन्नयन हेतु कार्य करते हैं।

सामाजिक चेतना का तात्पर्य भी यही होता है। विविधताओं से भरे हमारे राष्ट्र में एकता के साथ विविधता ही हमारी विरासत रही है। जब भी किसी बाहरी आक्रमणकारी ने हमको भयाक्रान्त करने का प्रयास किया हमने उस भय पर विजय पायी और यह विजय हमारे एकता के कारण ही प्राप्त हुई है। यही एकता हमारे संवैधानिक आदर्शों में भी दिखाई देती है। हमारी यही सर्वधर्म सम्भाव की भावना हमको एकजुट करती है एवं हमारे देश के संवैधानिक आदर्शों, इसकी एकता व अखण्डता की रक्षा करती है। यही हमारी सामाजिक बन्धुत्व व सामाजिक सौहार्द की भावना को बढ़ावा देती है। यह हमारा भारत देश अनेकताओं से भरा पड़ा है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी व गुजरात के कच्छ से लेकर असम के धुबरी तथा अनेकों भाषाएँ, अनेकों सांस्कृतियाँ फल फूल रही है। इन सबके तौर–तरीके, रहन–सहन व भोजन, पहनावा अलग–अलग है फिर भी हम अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कहलाना ही पसन्द करते हैं। यही हमारी एकता का मूलमंत्र भी है।

परन्तु हमारे राष्ट्र में भी अन्य राष्ट्रों की तरह कुछ मुठ्ठी भर व्यक्ति ऐसे है जो अपनी महत्वाकांक्षा के आगे राष्ट्र को बौना समझते हैं एवं समय–समय पर राष्ट्रीय अखण्डता व एकता को तोड़ने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे अराजक तत्व मुठ्ठी भर मात्रा में ही है परन्तु हमारे देश की भोली–भाली जनता को बरगलाकर धार्मिक उन्माद फैलाकर व समय–;समय पर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल होकर उन्माद फैलाकर सामाजिक सौहार्द को तोड़ने का प्रयास करते रहते हैं।

अतः जरूरत है नागरिकों को जागरूक व शिक्षित होने की जिससे समाज में एकत्व व सहानुभूतिपूर्ण वातावरण बनाया जा सके। भारत का नागरिक होने के नाते यह हमारा भी कर्त्तव्य है कि समाज को वैमनस्यता, अवसरवाद, जातिवाद से बचाना व इनका विरोध करना, हमारा अपना कर्त्तव्य है। जब तक हमारे नागरिकों में सामाजिक चेतना नहीं आएगी तब तक अराजक तत्व हमारी कमजोरी का फायदा उठाते रहेगें। अतः आवश्यकता हैकि पढ़ा–लिखा युवा वर्ग व बौद्धिक वर्ग आगे आकर अपनी जिम्मेदारियों को समझे व उनका निर्वहन करें। युवाओं के क्रियाकलाप व चरित्र उच्च कोटि के होने चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ी व समाज उसका अनुसरण कर सके। यह तभी सम्भव हो सकेगा जब स्वच्छ विचार व उत्तम चरित्र वाले युवा आगे आकर अपनी जिम्मेदारियों को समझे व समाज का हर व्यक्ति अपने अधिकार के प्रति जागरूक हो।

भारतीय समाज प्रगतिशील समाज का उदाहरण है और प्रगतिशील समाज के लिए यह अतिआवश्यक है कि उसके नागरिकों में संकुचित मानसिकता का अभाव हो तथा वसुधैव कुटुम्बकम की प्रधानता हो। हमें अपने अन्दर की विभिन्न संकीर्ण विचारधाराओं का परित्याग करना होगा तभी देश व समाज शान्ति व उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा। कोई भी धर्म व सम्प्रदाय आपस में बैर करना नहीं सिखाता है। यह तो विभिन्न धर्मों के तथाकथित ठेकेदारों द्वारा मानसिक उपज है जो माहौल को बिगाड़ने का प्रयास करते हैं। मजहबी उन्माद व वैमनस्य फैलाकर फायदा उठाने का प्रयास करते हैं। किसी धर्म सम्प्रदाय, मन्दिर, मस्जिद, चर्च व गुरुद्वारों में एक ही भगवान की पूजा होती है। अतः इन भेदभावों से ऊपर उठकर देश व समाज के विकास के लिए सहयोग करना होगा।

एम0एस0श्रीनिवास– सामाजिक चेतना को परिभाषित करते हुए इन्होंने लिखा है कि– ''सामाजिक जागरूकता न सिर्फ सामाजिक मूल्यों का ज्ञान है अपितु सामाजिक कार्यों में भागीदारी भी है।''

एटकिन्सन, स्मिथ एवं हिलगार्ड (1989)– में चेतना की एक वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय परिभाषा दी है '' हम लोग जब चेतना में होते हैं तो बाह्य एवं आन्तरिक घटनाओं से अवगत होते हैं, अपने गत अनुभूतियों को प्रतिबिम्बित करते हैं, समस्या–समाधान में सम्मिलित होते है, किसी नये उद्दीपकों पर ध्यान न देकर विशेष उद्दीपकों पर ही ध्यान देने में वरणशील होते हैं तथा किसी व्यक्तिगत लक्ष्य एवं पर्यावरणीय आवश्यकताओं के प्रति जानबूझकर अनुक्रिया का चयन करते हैं, एवं उसे कार्यान्वित करते हैं।''

अर्थात् सामाजिक चेतना देश तथा काल के प्रति सजग होना है। प्रायः यह भावना सब लोगों में नहीं पायी जाती है, इसलिए संचार माध्यमों से नागरिकों को विभिन्न सूचनाओं से परिचित कराया जाता है और इसी को सामाजिक क्रान्ति, गतिशीलता एवं परिवर्तन में देखा जा सकता है।

समस्या कथन– ''महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य– अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. महाविद्यालयों में अध्ययनरत व्यवसायिक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं– प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. महाविद्यालयों में अध्ययनरत व्यवसायिक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रयुक्त शोध विधि– शोध विधि का निश्चयन अध्ययन की प्रकृति उद्देश्यों तथा उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। इन्ही बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में आजमगढ़ मण्डल के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं व्यवसायिक वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श– प्रस्तुत हेतु प्रतिदर्श का चयन निम्न प्रकार किया गया।

महाविद्यालयों का चयन– प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों से है।

विद्यार्थियों का चयन– प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यानुसार आजमगढ़ मण्डल के 3 महाविद्यालयों का चयन किया जिनमें स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित एवं अल्पसंख्यक महाविद्यालयों का चयन कर उसमें अध्ययनरत् 600 विद्यार्थियों (200 कला वर्ग, 200 विज्ञान वर्ग एवं 200 व्यवसायिक वर्ग) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

सामाजिक चेतना प्रश्नावली– प्रस्तुत प्रश्नावली का निर्माण अध्ययनकर्ता द्वारा स्वयं किया गया है। इसमें उत्तम करणीय विकल्प के साथ अन्य तीन विकल्पों (कुल चार विकल्प) के माध्यम से सामाजिक चेतना का मापन करने का प्रयास किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

मध्यमान
मानक विचलन
मानक त्रुटि
टी–अनुपात

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

H_{01} महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

प्रतिदर्श	N	M	S.D	D	σ_D	t
छात्र	100	29.82	5.92	3.04	1.12	2.71
छात्राएं	100	32.86	9.47			
निष्कर्ष	H_1: $\mu_1-\mu_2\neq0$ 0.05 स्तर पर स्वीकृत H_{O1}: $\mu_1-\mu_2=0$ 0.05 स्तर पर अस्वीकृत					

सार्थकता स्तर = .05

क्योंकि t का परिगणित मान 2.71 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए .05 स्तर पर सारणी का मान 1.97 से अधिक है तथा .05 स्तर पर t का परिगणित मान सार्थक है। अतः शोध परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है'' स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग छात्राओं की सामाजिक चेतना कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा उच्च है अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों से उच्च है।

2. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

H_{O2} महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

प्रतिदर्श	N	M	S.D	D	σ_D	t
छात्र	100	33.78	9.39	4.70	1.18	3.98
छात्राएं	100	29.08	7.21			
निष्कर्ष	H_1: $\mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 स्तर पर स्वीकृत H_{O1}: $\mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 स्तर पर अस्वीकृत					

सार्थकता स्तर = .05

क्योंकि t का परिगणित मान 3.98 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए .05 स्तर पर सारणी का मान 1.97 से अधिक है तथा .05 स्तर पर t का परिगणित मान सार्थक है। अतः शोध परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है'' स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों की सामाजिक चेतना विज्ञान वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा उच्च है अर्थात् छात्रों में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं से उच्च है।

3. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।

H_{O3} महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

प्रतिदर्श	N	M	S.D	D	σ_D	t
छात्र	100	30.54	7.94	0.08	0.99	0.08
छात्राएं	100	30.62	5.87			
निष्कर्ष	H_1: $\mu_1 - \mu_2 \neq 0$ 0.05 स्तर पर अस्वीकृत H_{O1}: $\mu_1 - \mu_2 = 0$ 0.05 स्तर पर स्वीकृत					

सार्थकता स्तर = .05

क्योंकि t का परिगणित मान 0.08 है जो कि द्विपुच्छीय परीक्षण के लिए .05 स्तर पर सारणी का मान 1.97 से कम है तथा .05 स्तर पर t का परिगणित मान असार्थक है। अतः शोध परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है'' अस्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक चेतना में समानता है अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों के समान है।

निष्कर्ष– अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों से उच्च है।
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में सार्थक अन्तर है अर्थात् छात्रों में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्राओं से उच्च है।
- महाविद्यालयों में अध्ययनरत् व्यवसायिक शिक्षा वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् अर्थात् छात्राओं में सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति छात्रों के समान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलम, मो0 महमूद (2016). सोशल एडजेस्टमेन्ट एण्ड सोशल मैच्युरिटी एस प्रेडिकेटर्स ऑफ ऐकेडमी एचिवमेन्ट एमंग एडोलसेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फार्मेटिव एण्ड फ्यूरिस्टिक रिसर्च, वाल्यूम–3, इश्शू–12, पृ0 4495–4507

अस्थाना, अंजू (1991). ए स्टडी ऑफ सोशल मेच्योरिटी एमांग स्कूलिंग चिल्ड्रेन इन द सिटी ऑफ लखनऊ, पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।

2.कुमार, दिनेश एवं रीतू (2013). सोशल मैच्युरिटी ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर पर्सनालिटी, एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडिमेशनल रिसर्च, वाल्यूम–2, इश्शू–8, पृ0 14–25, www.tarj.in

3.कुन्दू, मौमिता एवं अन्य (2015). एडजेस्टमेन्ट ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशल इंटेलीजेन्स, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–3, नं0 11, पृ0 1398–1401

4.किन्स गिलमैन्स (2007). नैतिक और सामाजिक चेतना के विभिन्न पक्षों का मेटा एनालिसिस, अतिरिक्तांक, प्रतियोगिता दर्पण–(2011) हिन्दी मासिक राष्ट्रीय पत्रिका उपकार प्रकाशन, आगरा पृ0सं0 101

5.चन्नावार एवं खान, तरन्नूम (2018). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, आयुषी इण्टरनेशनल इण्टरडिस्पिलनरी रिसर्च जर्नल, वॉ0 5, इश्शू–4, पृ0 381–383